This question paper contains **4** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **2666**

Unique Paper Code : **12051303** **HC**

Name of the Paper : **Hindi Kahani**

Name of the Course : **B.A. (Hon.) Hindi—CBCS**

Semester : **III**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'पूस की रात' कहानी के आधार पर हल्कू का चरित्र-चित्रण कीजिए। 12

अथवा

'छोटा जादूगर' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

2. 'तीसरी कसम' कहानी के आधार पर हिरामन की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। 12

अथवा

'चीफ की दावत' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए।

3. कहानी के तत्त्वों के आधार पर 'परिंदे' की समीक्षा कीजिए। 12

अथवा

'दोपहर का भोजन' कहानी में चित्रित मूल समस्या पर विचार कीजिए।

P.T.O.

4. 'सिक्का बदल गया' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए। 12

अथवा

जीवनभर परिवार की बेहतरी के लिए चिंतित रहने वाले गजाधर बाबू रिटायरमेंट के बाद अपने घर में ही बाहरी क्यों हो जाते हैं ? 'वापसी' कहानी के आधार तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

5. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 9+9+9=27

(क) तुम्हें याद है, एक दिन तांगे वाले का घोड़ा दही की दुकान के आगे बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाये थे। आप घोड़े की लातों में चले गए थे और मुझे उठाकर दुकान के तख्ते पर खड़ा कर दिया था। ऐसे ही इन दोनों को बचाना। यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ।

अथवा

दस बज चुका था। मैंने देखा कि उस निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था। मोटर रोककर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रूठ रही थी। भालू मनाने चला था। ब्याह की तैयारी थी; यह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह

प्रसन्नता की तरी नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब जैसे स्वयं कांप जाता था।

(ख) हिरामन आज सुबह से तीन बार लदनी लाद कर स्टेशन आ चुका है। आज न जाने क्यों उसको अपनी भौजाई की याद आ रही है..... धुन्नीरा ने कुछ कह तो नहीं दिया है, बुखार की झोंक में। यहीं कितना अटर-पटर बक रहा था— गुलबदन, तख्त-हजारा ! लहसनवां मौज में है। दिन-भर हीराबाई को देखता होगा। कल कह रहा था, हिरामन मालिक, तुम्हारे अकबाल से खूब मौज में हूँ।

अथवा

गलियारे की सीढ़ियाँ न उतरकर लतिका रेलिंग के सहारे खड़ी हो गयी। लैम्प की बत्ती को नीचे घुमाकर कोने में रख दिया। बाहर धुंध की नीली तहें बहुत घनी हो चली थीं। लॉन पर लगे हुए चीड़ के पत्तों की सरसराहट हवा के झोंकों के संग कभी तेज, कभी धीमी होकर भीतर बह आती थी। हवा में सर्दी का हल्का सा आभास पाकर लतिका के दिमाग में कल से शुरू होने वाली छुट्टियों का ध्यान भटक आया।

(ग) गजाधर बाबू ने आहत दृष्टि से पत्नी को देखा, उन्होंने अनुभव किया कि वह पत्नी और बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन के निमित्त मात्र हैं। जिस व्यक्ति के अस्तित्व से पत्नी मांग में सिंदूर डालने की अधिकारिणी है, समाज में उसकी प्रतिष्ठा है, उसके सामने वह दो वक्त भोजन की थाली रख देने से सारे कर्तव्यों से छुट्टी पा जाती है। वह घी और चीनी के डिब्बों में इतनी रमी हुई है कि अब वही उसकी सम्पूर्ण दुनिया बन गयी है।

अथवा

राकेश काठ की तरह जड़ हो गया था। रमेश चौधरी की भर्राई आवाज जैसे हजारों मील दूर से आ रही थी। जिसे वह ठीक से सुन नहीं पा रहा था जैसे रमेश चौधरी किसी गहरी खाई में खड़ा है। जहाँ से प्रतिध्वनित होकर आ रही आवाज धीमी हो गयी थी। जिसे सुन पाना राकेश के लिए कठिन महसूस हो रहा था।